ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

निर्मल वर्मा के कहानी संग्रह 'जलती–झाड़ी' में आधुनिक–बोध

KEY WORDS:

डॉ. कंचन कुमारी सहायक प्रोफ़ेसर हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, बन्जार, कुल्लू हि.प्र. 175123

निर्मल वर्मा नयी कहानी के सर्वाधिक चर्चित कहानीकार हैं। उन्होंने नयी कहानी का नया मोड़ प्रदान किया, नयी कहानी का नया रुप प्रस्तुत किया। निर्मल वर्मा की कहानी में आधुनिकता का बोध अधिक गहरे में है। इनकी कहानी का मिजाज और अंदाज अन्य कहानकारों की रचनाओं से भिन्न है। इनके पहले की कहानी में रोमांटिक बोध को आंका जा सकता है लेकिन इनकी बाद की कहानी में आधुनिकता के बोध की ही गवाही मिलती है।

"जब हम किसी कलाकार या साहित्य सर्जक की बात करते हैं तो उसका जीवन, जीवन के अनुभव, भावानायें, विचार रुचियों, परिवेश अैर परिस्थितियां आदि उसके कृत्तित्व में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रुप में उभरकर सामने आती है। इसलिए साहित्य सर्जक के कृतित्व का आंकलन करने से पूर्व उसके व्यक्तित्व के विविध पक्षों को सूक्ष्मता से देखना आवश्यक हो जाता है।"1

साहित्य क्षेत्र में अनेक पुरस्कारों से सम्मानित प्रख्यात साहित्यकार एवं चिन्तक "निर्मल वर्मा का जन्म 3 अप्रैल, सन् 1929 को हिमाचल प्रदेश के मनोरम पर्यटन एवं ऐतिहासिक स्थल शिमला में हुआ। उनका बाल्यकाल पहाड़ों में ही व्यतीत हुआ। उनके पिता अंग्रेज़ों के जमाने में सरकारी अफसर थे, जिन्हें सरकारी कार्य के कारण कभी शिमला और दिल्ली रहना पड़ता था।"2

वह अपनी मां, बड़ी बहन और बड़े भाई रामकुमार के साथ शिमला में रहते थे। उनके दादा धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे। उनके घर का प्रवेश उसी तरह धार्मिक था जैसा प्रायः किसी भी हिन्दु परिवार के लोगों का होता है। उनका बाल्यकाल पहाड़ों में व्यतीत हुआ। इसलिए पहाड़ की स्मृतियां उनकी रचनाओं में सदैव संपृक्त रही है। पहाड़ों का सौन्दर्य ही नहीं पहाड़ों की नीरवता, सन्नाटा और खामोशी उन्हें अत्यन्त प्रिय है। उनकी रचनाओं में मनुष्य का रिश्तों में मौन का जो रुप है इस सम्बन्ध में वे कहते हैं, "मैं यह सोचता हूं कि यह सम्बन्ध काफी गहरा रहा होगा क्योंकि हमारी जो शहरी संस्कृति हैं उसमें पहाड़ों का महत्व केवल इसलिए नहीं है कि वहां रुमानी या प्राकृतिक सौन्दर्य है। बहुत कम लोग यह महसूस करते हैं कि आज भी हमारे पहाड़ों पर एक ऐसी खामोशी है जो हमारे शहरों में नहीं है और जिस व्यक्ति ने अपने जीवन के कई वर्ष पहाडों में गुजारे हों वह इस खामोशी को केवल शब्द का अभाव नहीं मानता बल्कि उसे जीने के एक 'पोजिटिव' विस्तार के रुप में भी स्वीकार करता है।"3

इनकी प्रारम्भिक शिक्षा शिमला में ही हुई, इसके पश्चात् इन्होंने दिल्ली के सुप्रसिद्ध कॉलेज 'सेंट स्टीफन्स' से इतिहास में स्नातकोतर की उपाधि प्राप्त की। 1959 में इन्हें चेकोस्लोवाकिया के प्राच्य विद्या संस्थानों की ओर से आमन्त्रित किया गया, जहां इन्होंने समकालीन चेक साहित्य पर शोध कार्य किया। निर्मल वर्मा ने यहां सात वर्ष रहकर अनेक चेक उपन्यासों और कहानियों का हिन्दी में अनुवाद किया है। "यह वह समय था जब चेकोस्लोवाकिया सेंसरशिप पुस्तकों पर पाबंदियों और हर तरह का दमन अपनी चरमसीमा पर था जिसे हम स्टालिनिस्टिक टेरर का समय कह सकते है।"4

उसके बाद कुछ वर्षों तक लंदन में रहे। लंदन उन्हें अच्छा भाहर प्रतीत हुआ। लंदन के प्रति अपने लगाव का कारण स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं, "शहरी जीवन का अलगाव और उसका भरपूर पन अगर कहीं मैंने एक साथ पाया है तो वह लंदन है। कभी–कभी मुझे हैरानी होती थी कि सुबह से शाम तक एक आध दर्जन भाब्दों को बोलकर भी रह सकता हूँ लेकिन मुझे वहां कभी वैसा अलगाव महसूस नहीं हुआ जैसा दिल्ली में महसूस होता है।"5

प्रख्यात साहित्यकार एवं चिंतक निर्मल वर्मा ने 25 अक्तुबर, सन् 2005 में मंगलावर की रात को 10:40 बजे अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में अन्तिम सांस ली थी, वे 76 वर्ष के थे और पिछले कुछ समय से बीमार थे। साहित्य क्षेत्र में निर्मल वर्मा का योगदान सराहनीय है। वे साहित्य रुपी भवन की नींव के पत्थर थे। कथा कहानी साहित्य की आदि विधा है। मानव सभ्यता के आदिकाल से कथा कहानी की परंपरा के किसी न किसी रुप में प्रचलित होने के कारण विश्व के प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद में पुरुरवा–उर्वशी आदि के आख्यानों का मिलना स्वाभाविक है। "कथा कहानी कहने की प्रवृत्ति मानवता के प्राचीनतम इतिहास से आबद्ध है। जीवन के समस्त भाव, घटनाएं संवेदनाएं, अन्तर्द्वंद्व और इस कहानी के विस्तृत क्षेत्र में समाविष्ट होते हैं।"

निर्मल वर्मा की कहानी में आधुनिकता का बोध अधिक गहरे में है। इनके पहले की कहानी में रोमांटिक बोध को आंका जा सकता है लेकिन इनकी बाद की कहानी में आधुनिकता के बोध की ही गवाही मिलती है। कहानियों में आधुनिकता की दृष्टि से भी इनका स्थान एकान्त स्वतंत्र है।

'आधुनिक' शब्द प्रायः तीन अर्थों में प्रयुक्त होता है। समय सापेक्ष्य के रुप में 'आधुनिक' एक विशेष कालावधि का सूचक है। विचारपरक रुप में 'आधुनिक' एक विशिष्ट दृश्टिकोण एक नये जीवन दर्शन का द्योतक है। समसामयिक रुप में 'आधुनिक' से अभिप्रायः वर्तमान के युगबोध से है। वैसे आधुनिकता के स्वरुप निर्धारण से उसके गतिशीलता में बाधा आती है। डॉ0 इन्द्रनाथ मदान के शब्दों में, "आधुनिकता एक चुनौती के रुप में सामने है। इसके मूल में वैज्ञानिक दृष्टि है।"7 साथ ही डॉ0 रमेश कुन्तल मेघ ने कहा है, "हमारे पिछड़े तथा संक्रांतिशील समाज की आधुनिकता के कई हाशिये हैं...तो फिर हम भारत की आधुनिकता को कैसे परिभाषित एवं परीसीमित करें।"8 डॉ0 धर्मवीर भारती ने आधुनिक बोध को संकट बोध माना है। वास्तविकता तो यह है कि आज का जीवनक्रम इतनी तेजी से बदल रहा है कि जब तक हम एक प्रकार की आधुनिकता को समझने की कोशिश करते हैं तब तक दूसरे प्रकार की आधुनिकता आ जाती है। आज की आधुनिकता ही कल की ऐतिहासिकता बन जाती है।

निर्मल वर्मा ने 'जलती झाड़ी' कहानी–संग्रह की कहानियों को लेकर इन्हें आधुनिक बोध की विभिन्न कोटियों के अन्तर्गत रखा है। जैसा निराशा एवं कुंठा, अकेलापन, अजनबीपन, अहं भावना, आन्तरिक विद्रोह, अविश्वास, असुरक्षा का भाव बेरोजगारी। निर्मल वर्मा के कहानी संग्रह 'जलती झाड़ी' में निराशा एवं कुंठा के दर्शन होते हैं। 'जलती झाड़ी' कहानी संग्रह की कहानी 'लवर्स' एक तरफा प्रेम–कथा है जिसमें प्रेम में निराश, नायक को स्त्री के नंगे जिस्म तक ले जाती है। लड़की जब शादी के प्रस्ताव को अस्वीकृत कर जब यह निर्णय देती है कि, "निंदी...यह गलत है, सच बहुत गलत है, निंदी। सच, तुम पागल हो। मैंने कभी भी ऐस नहीं सोचा। नॉट इन दैट वे!"9 स्पष्ट है कि उसकी सारी बेचैनी, चार शब्दों, नॉट इन दैट वे' में हवा में उड़ जाती है। प्रेम में निराशा कुंठा को जन्म देती है। मधुरेश जी ने इस सम्बन्ध में कहा है कि प्रेम की उपस्थिति यदि जीवन को पूर्णता देती है तो उसका अभाव अनेक प्रकार की कुंठाएं पैदा करता है। 'लवर्स' में प्रेम की सम्भावना उसे जिस अर्द्धनग्न युवती की तस्वीर के प्रति उदासीन बनाए थी, उस सम्भावना का अंत होने पर वह उसी तस्वीर को खरीदकर लौट आता है। वर्मा की कहानी 'माया दर्पण' कहानी की मातृ–विहीन नायिका 'तरन' विवाह योग्य हो चुकी है, लेकिन उसे दूसरे का अकेलापन जीना पड़ रहा है। पत्नी की मृत्यु के बाद अकेले रह गए दीवान साहब अपने अकेलेपन से घबराते हैं और इस लिए वह तरन का विवाह नहीं करना चाहते हैं। इसी कहानी में लेखक ने तरन और उसके बाबूजी के बीच के अजनबीपन को इस प्रकार सामने लाया है, "आते–जाते कभी सामने पड़ जाती थी, तो देखते भी नहीं, देख भी लेते तो इस तरह से मानों उसे पहचान पाने में दुविधा हो रही हो।"10 इस प्रकार सम्बन्धों में अजनबीपन को दर्शाया गया है। कहानीकार निर्मल वर्मा ने 'माया दर्पण' कहानी के माध्यम से पुरुष अहं को इस तरह बताया है, "सोचती हूं जब आज बाबू तेरे लिए ऊंची जाति और बड़े घराने की बात चलाते हैं तो क्या यह ठीक है?"11 यहां पुरुष का जातिगत अहं वर्णित हुआ है। 'लंदन की एक रात' कहानी में निर्मल वर्मा ने असंख्य ऐसे नवयुवकों का वर्णन किया है जो रोजगार की तलाश में अपना देश छोड़ यूरोपीय देशों की ओर पलायन करते हैं। परन्तु वहां भी उन्हें कोई रोजगार नहीं मिलता। कहानी में इस स्थिति को इस प्रकार दर्शाया गया है, "कल पन्द्रह मिनट पहले आ जाना। अगर कुछ लोग कल नहीं आये, तो तुम्हें ले लिया जाऐगा।"12 "वहां पहले से ही बीस–पच्चीस बेरोजगार युवकों की भीड़ जमा थी।"13 इस प्रकार स्पष्ट है कि बेरोजगारी की स्थिति इतनी दयनीय स्तर पर है कि दूसरे देश में भी रोज़गार मिल पाना सम्भव नहीं है।

नयी कहानी के कहानीकारों में निर्मल वर्मा का एक महत्वपूर्ण स्थान है, क्येंकि इन्होंने अपनी कहानियों का विषय वास्तविक जीवन की ऊब, हताशा, निराशा, घुटन तथा एकाकीपन को बनाया है। निर्मल वर्मा ने पाश्चात्य सभ्यता के आग्रह पर अधिक जोर दिया है तथा भारतीय संस्कृति को बहुत पीछे छोड़ दिया है। इस तरह भारतीयता का उनमें नितान्त अभाव है। लेकिन इस अभाव के होते हुए भी उन्होंने हिन्दी कथा–साहित्य जगत को एक अनुपम देन दी है। निर्मल वर्मा की कहानियों के अधिकार पात्र पबों एवं रेस्टोरेंटों में बीयर और शराब का सहारा लेकर रात व्यतीत करते हैं। निर्मल वर्मा ने अपनी कहानियों में जीवन के इसी खोखलेपन को उभारने का प्रयत्न किया है।

संदर्भ

1. डॉ0 हेमराज कौशिक, निर्मल वर्मा: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पुष्पांजली प्रकाशन, दिल्ली, पृ011 सं0 2006
2. वही।
3. निर्मल वर्मा, चीड़ों पर चांदनी, राजकमल प्रकाशन, पृ016, सं0 1988
4. वही, पृ0 18
5. वही, पृ0 25
6. लक्ष्मीनारायण लाल, हिन्दी कहानियों की शिल्प विधि का विकास, साहित्य भवन प्रयाग, पृ07, द्वि0 सं0 1960
7. डॉ0 इन्द्रनाथ मदान, निबंध और निबंध
8. डॉ0 रमेश कुंतल मेघ, आधुनिकता बोध और आधुनिकिकरण, पृ0 328, प्र0सं0 1969
9. निर्मल वर्मा, जलती झाड़ी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ0 16, प्र0सं0 1965
10. वही, पृ0 31
11. वही, पृ0 29
12. वही, पृ0 96
13. वही, पृ0 97